महात्मा गांधी

ठाकुरदास बंग

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी – 221001

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

अध्याय : पहला

पूरी दुनिया रोयी

30 जनवरी, 1948! शाम 5 बजे दिल्ली की प्रार्थनासभा में जाते समय महात्मा गांधी पर नाथूराम गोडसे ने पिस्तौल से तीन गोलियाँ दागीं। 'हे राम' कहते हुए गांधीजी ने शरीर त्याग दिया। उनके निधन से देश की गरीब-अमीर जनता रो पड़ी एवं पूरी दुनिया स्तब्ध रह गयी।

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने आकाशवाणी पर कहा, ''प्रकाश लुप्त हुआ है.....।'' थोड़ी ही देर में उन्होंने कहा, ''यह ऐसा प्रकाश था जो लुप्त होने वाला नहीं था। यह सामान्य प्रकाश नहीं था। हजार साल बाद भारत ही नहीं, पूरी दुनिया को यह प्रकाश उजाला देता रहेगा, ऐसा यह प्रकाश था।'' विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आईन्सटाईन ने कहा, ''आगे आनेवाली पीढ़ी शायद ही विश्वास करेगी कि अपने जैसा हाड़-मांस और खूनवाला यह देहधारी कभी इस धरती पर चल रहा था।'' संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस महामानव के सम्मान में अपना कामकाज स्थगित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। गांधीजी की मृत्यु का असहनीय सदमा सहन न कर देश के अनेक लोगों ने प्राण त्याग दिये। बुद्ध के बाद ऐसा मानव भारतभूमि पर नहीं हुआ।

यह महात्मा गांधी कौन थे? उनका जन्म कहाँ हुआ? जिस कारण महात्मा कहलाये और विश्वभर में वन्दनीय हुए, ऐसा उन्होंने क्या किया? उनके बाद जो पीढ़ी आयी उनके नाम के अलावा उनके विषय में अधिक जानकारी न हो तो आश्चर्य नहीं। पुरानी पीढ़ी की स्मरणशक्ति भी धुँधली हो गयी है। इसलिए हम थोड़े में उनका जीवन-चरित्र देखें।

अध्याय : दूसरा

मोहन गांधी

बचपन

करीब 144 साल पूर्व 2 अक्तूबर, 1869 के दिन गुजरात में, जहाँ भक्त सुदामा का जन्म हुआ, उस सुदामापुरी में यानी पोरबन्दर में मोहनदास गांधी का जन्म हुआ। पिता श्री करमचन्द गांधी गुजरात के तीन देशी राज्यों के दीवान थे। वे सत्य-प्रिय और दृढ़-निश्चयी थे। उन्होंने कभी रिश्वत नहीं ली। इसलिए दीवान होने पर भी उनके पास खास दौलत इकट्ठी नहीं हुई। माँ पुतलीबाई धार्मिक वृत्ति की थीं और व्रत आदि में मगन रहती थीं। रोज मन्दिर जाती थीं। पूजा-पाठ किये बिना उन्होंने कभी भोजन नहीं किया। ऐसे धार्मिक वातावरणवाले परिवार में मोहन पैदा हुआ।

मोहन का बचपन सामान्य बालकों जैसा ही था। बचपन में वे अति उत्तम विद्यार्थी नहीं रहे। इसके विपरीत जिस राजकोट के विद्यालय में पढ़े वहाँ 'मोहनदास करमचन्द गांधी तीन विषयों में फेल हुआ है' यह फ्रेम किया हुआ प्रमाण-पत्र आज भी टँगा हुआ दिखेगा। स्कूली किताबों के अलावा उन्होंने अन्य किताबें पढ़ी नहीं। लेकिन मन लगाकर अध्ययन करने से पाँचवे और छठे वर्ग में मोहन का उँचा नम्बर आया और उन्हें छात्रवृत्ति भी मिली। मोहन स्कूल में बहुत संकोची और डरपोक भी था। रात में वह साँप, चोर, भूत-प्रेत से डरता और घबराता था। सामान्य बालकों की भाँति मोहन को कुसंगति लगी। गांधी-परिवार वैष्णव था इसलिए मांसाहार नहीं किया जाता था। उस जमाने में सुधार के नाम पर ऐसी मान्यता शुरू हुई थी कि मांसाहार करने से शरीर बलवान् बनता है। हम पर राज्य करने का कारण अंग्रेजों का मांसाहार ही है। इसलिए अपने बड़े भाई के साथ मोहन ने चोरी की और कभी-कभी मांस भी खाया। बहुत दिनों तक यह सिलसिला चलने वाला नहीं था। फौरन मोहन के दिल में सद्‌बुद्धि जगी। भोले मोहन के लिए यह कुकृत्य

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

हजम करना सम्भव नहीं था। पिताश्री से छिपाकर यह करना पड़ा इसलिए मोहन के मन में पश्चाताप हुआ। आखिरकार उसने यह सब कबूल किया और पिताश्री के सामने चिटठ्ी रखकर वह रोने लगा। चिट्ठी पढ़कर उसके पिता भी रोने लगे। पिता-पुत्र के आँसुओं की बाढ़ में सारी गन्दगी बह गयी। पिताजी ने मोहन को क्षमा किया। इस घटना से मोहन के बाल-मन पर विलक्षण परिवर्तन हुआ। उसकी दृष्टि से यह अहिंसा का पदार्थपाठ सिद्ध हुआ, ऐसा अपने आत्मचरित्र में गांधीजी ने लिखा है।

बचपन में मोहन ने हरिश्चन्द्र का नाटक देखा। उसे हरिश्चन्द्र के सपने आने लगे। नाटक देखते-देखते आँसुओं की धारा बह निकली। उसके कोमल मन पर सत्याचरण की अमिट छाप पड़ी। अपने वृद्ध माता-पिता को काँवर में बिाकर तीर्थयात्रा करानेवाले श्रवणकुमार को दूसरे नाटक में देखकर पितृभक्ति के संस्कार बाल-मन पर हुए। स्कूल की परीक्षा में मोहन को एक अंग्रेजी शब्द की स्पेलिंग याद नहीं आयी। आगे बैठे हुए लड़कों की नोटबुक देखकर लिखने के लिए शिक्षक ने इशारा किया। लेकिन भोला मोहन समझ नहीं पाया। शिक्षक द्वारा अपने बूट की एड़ी से स्पर्श करने पर भी मोहन ने ध्यान नहीं दिया। उसे नकल करना कभी आया ही नहीं। इस प्रकार सत्याचरण के ये बीज बचपन से ही छोटी-मोटी घटनाओं द्वारा उसके जीवन में बोये जा रहे थे। भूत-प्रेत का डर छोड़ने के लिए दाई रम्भा ने बालक मोहन में रामनाम को दाखिल किया। बचपन में तुलसीदासजी की रामायण भी सुनी और रामायण के प्रति जो आदर पैदा हुआ वह आखिर तक रहा।

दिन-पर-दिन बीतने लगे। मोहनदास मैट्रिक पास हुआ। इसके पूर्व 13 साल की उम्र में तत्कालिक रिवाज के अनुसार कस्तूरबाई से मोहन का विवाह हुआ। 16 साल की उम्र में पिताश्री का निधन हुआ। वह कॉलेज में भी कुछ दिन गया। लेकिन विषय कठिन लगने के कारण उसे कॉलेज छोड़ना पड़ा। उन दिनों वकीली में खूब कमाई होती थी। वकील की अच्छी प्रतिष्ठा भी थी। उस समय इंग्लैण्ड से वकीली की परीक्षा पास करनेवाले बैरिस्टर को सब वकीलों में बड़ा माना जाता था। इसीलिए परिवार ने मोहन को इंग्लैण्ड भेज कर बैरिस्टर बनाने का तय किया। उस जमाने में विदेश-गमन निषिद्ध माना जाता था। लेकिन उसकी परवाह न करते हुए मोहनदास इंग्लैण्ड गया। 'शराब, मांसाहार और परस्त्रीगमन मैं कभी नहीं करूँगा,' ऐसी माँ के सामने त्रिविध प्रतिज्ञा लेकर मोहन विदेश गया। परदेश जानेवाले किसी ने इस प्रकार की प्रतिज्ञाएँ ली हों, ऐसा मोहनदास के अलावा एक भी उदाहरण नहीं सुना गया है। इसलिए यहीं से मोहनदास की विशेषता दीखने लगी थी।

युवक मोहन

युवक मोहनदास इंग्लैण्ड में करीब 3 साल रहा। इस अवधि में उसने बैरिस्टरी की परीक्षा दी। प्रारम्भ में पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करना वह सीखने लगा। सूट-बूट पहनने लगा और नाच भी सीखने लगा। वहाँ की सभ्यता में यह आवश्यक माना जाता था। नाच में उसकी दिलचस्पी जमी नहीं। इस सभ्यता के लिए बहुत पैसा खर्च करना पड़ता था। मोहनदास के पास इतना पैसा नहीं था। इसलिए कम खर्च करने के प्रयोग शरू हुए। अतः हाथ से भोजन बनाना शुरू किया। उसने शाकाहार पर अनेक किताबें पढ़ी और स्थानीय शाकाहारी संस्था का वह सदस्य बना। हिन्दू, बौद्ध और ईसाई धर्मग्रन्थों का वह अभ्यास करने लगा। गीता, बुद्ध-चरित और बाइबिल उसने पढ़े। बाइबिल के गिरि-प्रवचन से उसे बहुत आनन्द आया। गीता के स्थितप्रज्ञ के लक्षण हृदय में गहरे पैठ गये। बाद में ये स्थितप्रज्ञ-लक्षण आजीवन प्रार्थना का हिस्सा बन गये। माताश्री के सामने हुई प्रतिज्ञा यह युवक भूला नहीं। जीवन के अन्दर प्रतिज्ञा महत्त्व का अंग है और संकट के समय आदमी पापकर्म से बच जाता है, यह मोहन के खयाल में आया। इस प्रकार अध्यात्म जीवन की बुनियाद बनने लगी। उसके तरुण मन में पश्चिम की सभ्यता, बाह्य उपचारों और भोग-विलास के प्रति घृणा पैदा हुई।

1891 में मोहनदास बैरिस्टर बनकर भारत लौटा। जहाज से मुम्बई में उतरने पर उसे माँ की मृत्यु की खबर

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

मिली। मातृभक्त मोहनदास को अपार दुख हुआ। लेकिन जीवन में गीता पैठ रही थी, इसलिए मोहनदास न रोया, न शोक में डूबा। अपना नित्य काम करता रहा।

इंग्लैण्ड से बैरिस्टर तो हुआ; लेकिन उसे भारत के कानूनों का ज्ञान नहीं था। उन दिनों इस बैरिस्टर को बहस करना अभी आया नहीं था। पहले मुकदमे में वादी से जिरह करने के लिए वह जज के सामने खड़ा हुआ, लेकिन मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। पैर काँपने लगे और सिर चकराने लगा। उसने दूसरे वकील को मुकदमा दे दिया। बाद में उसने हाईस्कूल में अध्यापक बनने की कोशिश की। लेकिन स्नातक न होने से उसे शिक्षक की नौकरी नहीं मिली। पेशे की चिन्ता में डेढ़-दो साल निकल गये। परिवार की आर्थिक स्थिति मामूली थी। क्या करे, यह सूझ नहीं रहा था।

अध्याय : तीसरा

बैरिस्टर गांधी का दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह

ऐसी विषम परिस्थिति में एक काम सामने आया। दक्षिण अफ्रीका में दादा अब्दुल्ला द्वारा प्रतिपक्ष पर दायर किये मुकदमे में वहाँ के वकील की मदद करने के लिए बैरिस्टर गांधी साल भर के लिए दक्षिण अफ्रीका रवाना हुए। गये थे सालभर के लिए, लेकिन दक्षिण अफ्रीका में उन्हें 21 साल रहना पड़ा। वहाँ उन्हें अपने जीवन के ध्येय का किस रूप में साक्षात्कार हुआ, यह हम देखें।

जिस मुकदमे के लिए गांधी अफ्रीका गये थे उसका पंचों द्वारा कोर्ट के बाहर समझौते का रास्ता गांधी ने ही खोजा। कोर्ट के बाहर झगड़े सुलझाने में गांधी को बड़ा आनन्द आता था। इस काम में फीस ज्यादा नहीं मिलेगी, यह गांधी जानते थे। वे गरीब थे, तो भी पैसे का लोभ गांधी को कभी नहीं छुआ। सच बोलने का उनका संकल्प अटल था, इस कारण झूठे मुकदमे उन्होंने कभी लिये नहीं। परिणामस्वरूप पहले कुछ दिन कठिनाई में गुजरे। बाद में ईमानदार बैरिस्टर के रूप में ख्याति फैली। इस कारण न्यायाधीशों पर भी प्रभाव पड़ा। अन्ततः पैसों की दृष्टि से गांधी बहुत घाटे में नहीं रहे। इस प्रकार भगवान् भक्त की परीक्षा लेता है! साथ ही साथ उस परीक्षा में सफल होने के लिए शक्ति वही प्रदान करता है।

उन दिनों दक्षिण अफ्रीका के गोरे अश्वेतों का अपमान करते थे और उनके साथ भेदभाव बरतते थे। अश्वेत लोगों के रहने और घुमने के स्थान अलग थे। सब कुछ अलग! उन्हें 'कुली' कहा जाता था। गांधी को 'कुली बैरिस्टर' कहते थे। अफ्रीका की अधिकांश जनता काली यानी नीग्रो थी। भारतीय संख्या में थोड़े थे। इनके प्रकार भी अनेक थे—व्यापारी, वकील, मजदूर इत्यादि। उनकी भाषा गुजराती, तमिल, तेलगू थी। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी—इसके धर्मभेद तो थे ही। काम के अलावा भारतीय आपस में मिलते भी नहीं थे।

अफ्रीका पहुँचने पर तीसरे दिन ही गांधी डरबन की कोर्ट में गये। मजिस्ट्रेट ने उनके सिर की गुजराती पगड़ी उतारने के लिए कहा। गांधी को यह बात अपमानजनक लगी। वे कोर्ट छोड़कर चले गये। इस प्रकार अन्याय के सामने न झुकने यानी असहकार का पहला कदम उठाया गया। पगड़ी का समर्थन करने वाले एक लेख उन्होंने अखबारों में छापने के लिए भेजा। अखबारों में इस घटना की काफी चर्चा हुई और अनायास ही दक्षिण अफ्रीका में 'कुली बैरिस्टर' का मानो विज्ञापन हो गया। लेकिन वकालत का व्यवहारिक ज्ञान गांधीजी को मामूली था। 'प्रामिसरी नोट' यह शब्द उन्हें मालूम नहीं था। जमा-खर्च और हिसाब का उन्हें ज्ञान नहीं था। इसलिए वे वकील की क्या मदद करते! गांधी के खयाल में अपना अज्ञान आया। विद्यार्थी की भाँति वे वहाँ अध्ययन करने लगे। अज्ञान का व्यर्थ अहंकार उन्हें नहीं था। पढ़ने और उसके लिए मेहनत करने का उन्हें आलस नहीं था।

छठे दिन वकील की मदद करने बड़े शहर प्रिटोरिया जाने का मौका उन्हें मिला क्योंकि मुकदमे की सुनवाई

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

वहीं हो रही थी। मुकदमे की कुछ बातें प्रतिवादी को मालूम हो जायेंगी और मेरा नुकसान होगा, इस डर के कारण प्रतिवादी से मिलने के लिए सेठ अब्दुल्ला ने गांधी को मना किया। गांधी ने कहा, ''मैं सबसे मिलूँगा, आप शंका मत रखिए। मुझे प्रतिवादी से मैत्री करनी है।'' यह सुनकर सेठजी को आश्चर्य हुआ। जो कहा गांधी ने वही किया। गांधी ने अथक परिश्रम कर पहले ही साल कोर्ट के बाहर विवाद मिटा दिया। वकालत की जड़ पर ही यह कुल्हाड़ी चलाना हुआ। खैर! प्रिटोरिया जाने के लिए प्रथम श्रेणी का रेल टिकट खरीदकर गांधी ने प्रवास शुरू किया।

रात को 9 बजे नेटाल प्रान्त की राजधानी मैरित्सबर्ग का स्टेशन आया। एक गोरा प्रवासी उस डिब्बे में आया। गांधी गोरा आदमी नहीं है, यह देखकर वह लौटा और रेलवे के एक अधिकारी को लेकर आया। अधिकारी ने गांधी से कहा कि आप यह डिब्बा छोड़कर तीसरी श्रेणी के डिब्बों में चले जाइए। 'मेरे पास प्रथम श्रेणी का टिकट है', बैरिस्टर गांधी ने रेल अधिकारी से कहा। रेल अधिकारी ने कहा, ''वह रहने दीजिए। यह दलील नहीं चलेगी, आपको उतरना ही पड़ेगा। नहीं उतरे तो आपको सिपाही जबर्दस्ती उतारेगा।'' उतने ही निश्चय से गांधी ने कहा, ''तो फिर सिपाही को मुझे उतारने दीजिए। मैं नहीं उतरूँगा।'' सिपाही आया और गांधी को हाथ पकड़कर, उन्हें धक्का मारकर नीचे ढकेल दिया और गांधी का सामान भी निकाल कर फेंक दिया। दूसरे डिब्बे में जाने से गांधी ने इनकार किया। ट्रेन चली गयी। मौसम ठण्ड था। यह स्थान ऊँचाई पर होने से सर्दी भयंकर थी। गांधी ने सारी रात कड़ाके की ठण्ड में काँपते हुए बितायी, लेकिन सामान को न हाथ लगाया, न सामान में से गर्म कपड़े निकाले। गांधी रातभर सोचते रहे कि मेरा कर्तव्य क्या है? या तो मुझे हक के लिए लड़ना चाहिए या फिर अपमान होंगे उसे सहन कर, मुकदमा पूरा कर, भारत लौटना चाहिए। मुझे दुख सहन करना पड़ रहा है। लेकिन यह ऊपर-ऊपर की बात हुई। अन्दर गहरे जमें हुए वर्णद्वेष के महारोग का यह बाह्य लक्षण है। इसका विचार करते-करते गांधी ने निश्चय किया कि मैं इस अपमान के खिलाफ लड़ूँगा। उसी रात बैरिस्टर मोहनदास गांधी सत्याग्रही गांधी बना। सिद्धार्थ में से बुद्ध पैदा हुआ।

दूसरे दिन गांधी चूप नहीं बैठे। उन्होंने रेलवे के जनरल मैनेजर को इस सन्दर्भ में लम्बा तार भेजा। वहाँ गांधी से मिलने आये हुए भारतीय व्यापारियों ने कहा कि आपको उतार दिया, इसमें नया क्या हुआ? ऐसा तो हमेशा होता है।

दूसरे दिन गांधी अगले स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ से घोड़ा-गाड़ी से आगे जाना था। घोड़ा-गाड़ी में एक प्रवासी बैठा था। उसे अन्दर की जगह चाहिए थी, इसलिए उसने गांधी को कोचवान के नजदीक बैठने को कहा। थोड़ी देर बाद कोचवान के नजदीक बाहर की हवादार जगह में बैठकर सिगरेट पीने की उसे ललक आयी। गांधी ने बाहर की सीट उन्हें नहीं दी। गुस्से में गोरे ने गांधी का अपमान किया। उन्हें वह बाहर धकेलने लगा और मुक्के जमाने लगा। इधर गाड़ी का पीतल का डण्डा गांधी ने मजबूती से पकड़ रखा था। आखिरकार मारनेवाला थक गया और झुँझलाते हुए, गालियाँ बकते हुए, वह जहाँ बैठा था, वहीं बैठा रहा। इस प्रकार गांधी का पहला सत्याग्रह सफल हुआ।

भारतीयों को रोज-रोज ऐसे अपमान सहन करने पड़ते थे। अन्याय का प्रतिकार करनेवाला पहला आदमी गांधी था। दक्षिण अफ्रीका के गन्ने के बागानों में काम करने के लिए पाँच वर्ष के करार पर 150 साल पहले भारत से वहाँ मजदूर लाये गये इन्हें 'गिरमिटिया' कहते थे। इस विषमता के खिलाफ गांधीभाई के (दक्षिण अफ्रीका में भारतीय गांधीजी को 'गांधीभाई' कहते थे) मार्गदर्शन में आन्दोलन शुरू हुआ। इसलिए गांधीभाई ने प्रतिपक्ष से भी जान-पहचान की। 'नेटाल इण्डियन कांग्रेस' नामक संस्था की स्थापना की। 'इण्डियन ओपेनियन' नामक अंग्रेजी, गुजराती, तमिल और हिन्दी में होनेवाला साप्ताहिक निकाला। समाज-सुधार के कई मामलों में उन्होंने हाथ डाला। वास्तव में, गांधी को गढ़ने और महान् बनाने का श्रेय दक्षिण अफ्रीका को देना होगा। इस बैरिस्टर ने लोगों की सेवा करने में जरा भी कसर नहीं रखी। उदाहरण के लिए, तीन आदमियों को अपनी फुर्सत के समय मुफ्त में अंग्रेजी सीखाने की इच्छा थी। इसलिए बैरिस्टर गांधी ने इन तीनों लोगों के घर प्रति दिन कई मील पैदल जाकर अंग्रेजी पढ़ाना शुरू किया। गांधीजी के सामने छोटे और बड़े काम का भेद नहीं था। वे सभी काम समान मानते थे, यह उदाहरण इसको सिद्ध करता है।

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

दक्षिण अफ्रीका का एक दूसरा प्रान्त ट्रांसवाल नाम का था। वहाँ प्रति व्यक्ति तीन पौण्ड (यानी उस समस के 45 रु0) का कर भारतीय लोगों पर लगाने का बिल विधानसभा में लाया गया। आर्थिक दृष्टि से, खास कर गरीब मजदूरों पर, इस कर का भार असहनीय था। इसके अलावा यह कर साफ-साफ अपमानजनक था। मुकदमा खतम हो जाने पर जिस दिन गांधीभाई भारत लौटने वाले थे, उस दिन उन्होंने अखबारों में पढ़ा कि हिन्दुस्तान के लोगों के मताधिकार छीन लेने की चर्चा विधानसभा में चल रही है। वहाँ के भारतीय अपने स्वार्थ में मगन रहते थे। अतः इन भारतीयों को कौन जगायेगा? गांधी के स्वदेश लौटने के दिन उन्हें विदाई देने की सभा में इस पर चर्चा हुई। लोगों के आग्रह पर एक महीना और अफ्रीका में रहना गांधीभाई ने स्वीकार किया। यह एक महीना 21 साल के लम्बे समय में बदल गया। बीच में तीन बार दो-चार महीनों के लिए गांधी भारत आये। यहाँ आने पर हिन्दुस्तान का दौरा कर दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के दुखों की जानकारी उन्होंने दी। सार्वजनिक काम के लिए फीस न लेने का निश्चय रहने से उन्होंने अपना रहन-सहन सादा और खर्च कम किया।

इन भेदों के विरुद्ध नेटाल इण्डियन कांग्रेस ने बड़ा आन्दोलन किया। आन्दोलन के प्रभाव को देखकर 25 पौण्ड का कर तीन पौण्ड पर लाया गया। लेकिन प्रश्न था कि गोरों पर यह कर नहीं है तो अश्वेतों पर क्यों लगाया जाय? इस मुद्दे को लेकर लम्बी लड़ाई हुई। गोरों को छोड़कर अन्यों का विवाह गैर-कानूनी ठहरानेवाला नया कानून बनाने की बात विधानसभा में चली। गांधीजी ने कस्तूरबा को आगे कर ऐसे कानून के खिलाफ सत्याग्रह शुरू किया। इससे महिलाओं में अभूतपूर्व जागृति आयी। सैकड़ों स्त्रियाँ पहली बार जेल गयीं। उनमें से कुछ शहीद भी हुईं। इन अन्यायों के खिलाफ हजारों हस्ताक्षरों से युक्त अर्जी इंग्लैण्ड की सरकार के सामने उन्होंने भिजवायी, क्योंकि उन दिनों दक्षिण अफ्रीका के उपनिवेशों पर इंग्लैण्ड की (नाम के लिए ही क्यों न हो) सत्ता थी। इन प्रश्नों की जानकारी देने के लिए गांधीजी ने दो पुस्तकें लिखीं। इन सवालों का समाधान कराने के लिए तीन बार गांधीजी ने सत्याग्रह किया। शस्त्रों के बिना चलनेवाली इस अपूर्व लड़ाई का नामकरण करनेवाला 'सत्याग्रह' शब्द गांधीभाई ने अफ्रीका में ही खोजा। 1908 की लड़ाई में वे खुद और उनके साथ 10 हजार से भी अधिक लोग जेल गये। आखिर 1917 में तीन पौण्ड का कर समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार सामूहिक सत्याग्रह के तंत्र की खोज इस कालखण्ड में हुई। जहाँ एक प्रतिशत भी भारतीय न हों, अपनी मातृभूमि से हजारों मील दूर गांधीभाई ने जो अपूर्व अहिंसक संग्राम किया उसमें निरक्षर मजदूरों, स्वार्थ में आकण्ठ डूबे हिन्दू और मुसलमान व्यापारियों को इस लड़ाई का सैनिक बनाया। यह देखकर बुद्धि कुण्ठित हो जाती है। इस आदमी को ईश्वर ने किसी अलग मिट्टी का बनाया है, ऐसा महसूस होने लगता है।

इस अवधि में वहाँ की सरकार के विरुद्ध जुलू जाति ने दंगा किया। बोअर युद्ध हुआ। ऐसे समय गांधीजी ने अपनी लड़ाई स्थगित की और सरकार की मदद करने के लिए जख्मी सैनिकों को रणभूमि में से उठाकर अस्पताल में पहुँचाने के लिए स्वयंसेवकों का दल तैयार किया। सरकार की अड़चन का फायदा न उठाते हुए अपनी लड़ाई स्थगित कर उसे मदद करने का अद्‌भुत काम उन्होंने किया। इसी अवधि में प्लेग फैला। रोग से पीड़ित रोगियों की शुश्रूषा गांधीभाई करने लगे। खदान मजदूरों पर होनेवाले अन्यायों के विरुद्ध भी उन्होंने सत्याग्रह किया। 1897 में भारत से लौटते हुए अफ्रीका के बन्दरगाह पर उतरते ही गोरों ने उन पर भीषण हमला किया और उन्हें मार-मार कर बेदम कर दिया। एक दूसरी गलतफहमी के कारण एक पठान ने उन्हें लाठियों से पीट डाला। परिणामस्वरूप उनके सामने के दो दाँत भी टूट गये। लेकिन उन्होंने न गोरों पर मुकदमा चलाया, न उस पठान पर। यह देखकर गोरे लज्जित हुए। उस पठान ने भी कई वर्षों बाद माफी माँगी। व्यक्तिगत अन्याय के सन्दर्भ में मुकदमा नहीं करना और सार्वजनिक अन्याय को सहन नहीं करना — यह उनका मंत्र था। इसका विलक्षण परिणाम हुआ।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीभाई ने हर रोज 18-18 घण्टा—कई दिन 21 घण्टा काम किया। इसलिए अन्य विषयों के अध्ययन के लिए इस बैरिस्टर को समय ही नहीं मिला। 60 साल के उनके सार्वजनिक जीवन में अध्ययन के लिए उन्हें केवल जेल में ही समय मिला, ऐसा उन्होंने लिख रखा है। लड़ाई के दौरान धार्मिक चिन्तन, आहार के

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

प्रयोग, खेती, स्वावलम्बन, उद्योग द्वारा लड़के-लड़कियों का जीवन-शिक्षण, रोगियों की शुश्रूषा, प्राकृतिक चिकित्सा इत्यादि कई काम गांधी के चल ही रहे थे। इन कामों द्वारा यानी सेवा द्वारा आत्मदर्शन का उनका अविराम प्रयत्न चल रहा था। देशवासियों के हृदय में प्रवेश करने के लिए वे यही पर उर्दू और तमिल पढ़े। ईसाई पादरियों ने उन्हें ईसाई बनाने के लिए कई बार कोशिश की। जवाब में गांधीजी ने गीता का गहरा अध्ययन शुरू किया। लेकिन इसके लिए समय कहाँ था? इसलिए एक दीवाल पर गीता के श्लोक चिपका कर दाँत साफ करते समय उसे देखकर कण्ठस्थ करना प्रारम्भ किया। सभी धर्मों का अध्ययन करने के बाद सर्वधर्म समभाव की बुनियाद उनके मन में पैदा हुई।

एक दिन अफ्रीका में रेल से प्रवास करते समय रस्किन की 'अन टू दिस लास्ट' नामक किताब पढ़ी। बाद में गांधीजी ने उसका अनुवाद किया और उसे 'सर्वोदय' के नाम से प्रकाशित किया। इस पुस्तक में नीचे लिखे हुए तीन बुनियादी सिद्धान्त हैं:

1. सबके कल्याण में खुद का कल्याण है।
2. वकील और नाई दोनों के काम की कीमत समान होनी चाहिए।
3. सदा, शरीरश्रम का किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

यह विचार उन्हें जँच गया। ट्रेन से उतरते ही उन्होंने मित्रों से यह बात कही और किसान बनने के लिए दूसरे ही दिन 20 एकड़ जमीन मोल ले ली। उस जमीन पर इस बैरिस्टर ने किसान का जीवन प्रारम्भ किया। इसके लिए पहले फिनिक्स आश्रम और बाद में टॉलस्टॉय फार्म की स्थापना की। वहाँ स्वावलम्बन के प्रयोग चले। जो जँच गया उसका फौरन अमल करनेवाला व्यक्ति यानी गांधी, ऐसा समीकरण बना। 1909 में भारतीयों का पक्ष इंग्लैण्ड में रखने के लिए वहाँ गये। वापस लौटते समय जहाज पर ही उन्होंने 'हिन्दस्वराज' नाम की मौलिक पुस्तक लिखी। इस लम्बी लड़ाई में जन-जागरण के लिए उन्हें उपवास भी करने पड़े। दो दशकों के ऊपर चलनेवाली इस लड़ाई में सफल होकर गांधी 1914 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे।

अध्याय : चौथा

कर्मवीर गांधी

भारत पहुँचने पर वे चुप कैसे बैठते? क्योंकि भारत गुलाम था। चुप बैठते तो इस गांधी को कौन जानता? गांधी यानी प्रचण्ड आँधी। गुरु गोखले की आज्ञा से सालभर जबान न खोलते हुए वे भारतभर घूमे और भारत को जाना-पहचाना। वे लोकमान्य तिलक से भी मिले। साल समाप्त होने पर 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अलंकारों से सजधज कर आये हुए रजवाड़ों को देखकर, कंगाल भारत में चलनेवाले इस विलास की गांधी ने अपने भाषण में घोर भर्त्सना की और खलबली मचा दी। बिहार के चम्पारण में किसानों को जबर्दस्ती नील बोने के आदेश के कारण अन्याय चल रहा था। इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने घर-घर जाकर लोगों की जबानी उनपर हो रहे उत्पीड़न को लिखना शुरू किया । 'चम्पारण छोड़कर चले जाओ' यह पाबंदी सरकार ने गांधी पर लगायी। गांधी ने इसका उल्लंघन किया। अब क्या करें इस पेशोपेश में सरकार पड़ गयी। अन्त में सरकार ने यह अन्याय पूर्णरूप से समाप्त कर दिया। भारत में गांधीजी का यह पहला सफल सत्याग्रह हुआ ।

गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों पर लगाया गया अतिरिक्त लगान के खिलाफ आन्दोलन कर गांधीजी ने स्थगित करवाया। अहमदाबाद में मिल-मजदूरों की हड़ताल सफलता से संचालित कर वे मजदूरों के भी नेता बने। ये तीनों सत्याग्रह कांग्रेस व भारतीय नेताओं के समर्थन के बिना अपने अकेले के बल पर उन्होंने किये, यह आश्चर्य की बात है। इसलिए राष्ट्र उन्हें 'कर्मवीर गांधी' के नाम से जानने लगा।

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

अध्याय : पाँचवाँ

महात्मा गांधी

1914 में प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हुआ। अभी कर्मवीर गांधी का ब्रिटिश राज पर विश्वास था। इसलिए उन्होंने विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की मदद के लिए रंगरूटों की भर्ती शुरू की। इसका इनाम दिया अंग्रेजी राज ने युद्ध के अन्त में मानवीय अधिकारों को पैरों तले रौंदनेवाला रौलट कानून पास कर। इसका निषेध करने के लिए अमृतसर के जालियाँवाला बाग में सभा हुई। इस शान्त सभा पर अंग्रेज सरकार ने अन्धाधुंध गोलियाँ बरसाकर 1400 से अधिक लोगों की हत्या की। इस कतल को देखकर गांधी गरज उठे, ''यह सरकार शैतानी है।'' इसलिए ऐसे साम्राज्य से असहयोग किया जाय। अंग्रेजी स्कूलों व कचहरियों का लोग बहिष्कार करें, वकील अपनी वकालत छोड़ें, विद्यार्थी स्कूल छोड़ें और सरकार द्वारा दी गयी पदवियाँ उसे वापस की जायँ, ऐसा आवाहन उन्होंने राष्ट्र को किया। अर्जियों के अलावा अन्य कोई भी रास्ता न जाननेवाले भारत में असहकार का यह राष्ट्रव्यापी पहला प्रचण्ड आन्दोलन था। इससे देश में तूफान आया और देश जाग गया। यह असामान्य कार्य देखकर राष्ट्र ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया। आन्दोलन के प्रचार के लिए गांधीजी ने 'नवजीवन' और 'यंग इण्डिया' दो साप्ताहिक हिन्दी और अंग्रेजी में निकाले।

यह अहिंसक आन्दोलन भारत में नया था। इसलिए उत्साह में पागल होकर अहमदाबाद, मुम्बई और उत्तर प्रदेश के चौरीचौरा में दंगे होकर आगजनी और प्राणहानि हुई। हिंसा को काबू में लाने के लिए गांधीजी ने उपवास किया। चौरीचौरा की घटना के बाद 1922 में गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। अब आन्दोलन शान्त हो गया। यह देखकर अंग्रेज सरकार ने गांधीजी पर, उनके साप्ताहिकों में प्रकाशित तीन अग्रलेखों के लिए राजद्रोह का मुकदमा चलाया। महात्माजी ने न्यायालय के सामने कहा कि अग्रलेख लिखकर सोयी हुई जनता को जगाना, यह मेरा कर्तव्य और अधिकार है। आपको यह मान्य हो तो आप न्यायासन छोड़ दीजिए। लेकिन कानून के अनुसार आप इसे गुनाह मानते हों तो मुझे अधिक-से-अधिक सजा दें। महात्मा की इस धीर-गम्भीर वाणी से भारत के साथ पूरी दुनिया अश्चर्यचकित हो गयी। जज ने अपने निर्णय में गांधीजी की तारीफ की और कहा कि कानून के अनुसार मैं आपको छह साल की सजा सुना रहा हूँ। लेकिन इस बीच राजनीतिक वातावरण में परिवर्तन हुआ और सरकार ने आपको मुक्त किया तो मुझे आनन्द होगा। दो साल बाद वे जेल में बीमार पड़ गये और अपेन्डिसाइटिस का ऑपरेशन करने का तय हुआ। यह ऑपरेशन उन्होंने अंग्रेज सर्जन से करवाया। दुनिया को इस आश्चर्य का दूसरा धक्का लगा। अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ गांधीजी संघर्ष करते थे, लेकिन अंग्रेज व्यक्ति के प्रति उन्हें आदर था।

जेल से छूटने पर महात्मा गांधी ने जन-जागरण के लिए खादी का कार्यक्रम अपनाकर देश का दौरा किया। इस दौरे से निराश भारत की हिम्मत बँधी। 1929 में लाहौर के अधिवेशन में कांग्रेस ने सम्पूर्ण स्वराज्य अपना उद्देश्य तय किया और इस पर अमल करने के लिए महात्मा गांधी को सेनापति बनाया। देश तैयार है यह देखकर गांधीजी ने 1930 में राष्ट्र को, नमक पर कर का कानून तोड़कर नमक बनाने का निर्देश दिया। इसलिए स्वयं गांधीजी ने करीब 300 मील की, साबरमती आश्रम से समुद्र-किनारे पर स्थित दांडी तक, 79 सत्याग्रहियों को लेकर कूच किया। भविष्य में यह 'दांडी-कूच' नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहाँ जाकर उन्होंने नमक का कानून तोड़कर नमक बनाया। इसके बाद लाखों लोगों ने सैकड़ों स्थानों पर नमक का कानून तोड़ा। इसके साथ ही उग्र सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ, विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों पर 'पिकेटिंग' की गयी और विदेशी कपड़ों की जगह-जगह होली जलायी गयी। ऐसे विविध कार्यक्रम इस सत्याग्रह में समाविष्ट किये गये। सरकार ने गांधीजी के साथ व्यापक पैमाने पर गिरफ्तारियाँ कर करीब एक लाख लोगों को जेलों में बन्द किया। इस अपूर्व जागृति को देखकर सरकार के छक्के छूट गये। सरकार ने गांधीजी से सुलह की और इस भाँति सत्याग्रह सफल हुआ।

इसके बाद भारत के भावी संविधान पर बातचीत करने के लिए गांधीजी गोलमेज परिषद में शरीक होने के लिए लंदन गये। सरकार की यह चाल सिद्ध हुई। वह असफल होनी ही थी। गांधीजी ने भारत लौटते ही 1932 में आन्दोलन प्रारम्भ किया। इन्हीं दिनों, अछूतों के लिए अलग निर्वाचन-क्षेत्रों की अंग्रेज सरकार ने घोषणा की। 'बाँटो और राज करो' इस घोषणा के पीछे अंग्रेजों की राजनीति देखकर, अस्पृश्यों को अलग निकालने की घोषणा के खिलाफ महात्माजी ने जेल में उपवास शुरू किया।

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

एक सप्ताह में समझौता हो जाने से उपवास समाप्त हो गया। संयुक्त निर्वाचन-क्षेत्र के लिए सरकार तैयार हुई। इस निमित्त अस्पृश्ता-निवारण के लिए गांधीजी ने भारतभर दौरा कर प्रचण्ड जन-जागरण किया। हजारों मन्दिर और लाखों कुएँ इस आन्दोलन के कारण अवर्णों के लिए खोले गये। इसी दशक में ग्रामोद्योग संघ, नयी तालीम संघ आदि विविध अखिल भारतीय रचनात्मक संस्थाओं की स्थापना की गयी। इससे दस साल पहले ही चर्खा संघ की स्थापना हो चुकी थी। रचनात्मक कार्य के प्रति स्वयं को समर्पित करने के लिए वे 1934 में कांग्रेस से बाहर आ गये। वर्धा जिले के सेवाग्राम में उन्होंने आश्रम की स्थापना की और समग्र ग्राम-सुधार के विविध प्रयोग प्रारम्भ किये। भारत गाँवों का देश है यह बात महात्मा गांधी कभी भूले नहीं।

इतने में 1939 में दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हुआ। भारतीयों से बिना पूछे अंग्रेज सरकार ने भारत को युद्ध में शामिल कर लिया और लोगों पर अनेक पाबन्दियाँ लगायीं। अतः 1940 में भाषण की स्वतंत्रता के लिए गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्यग्रह शुरू किया और विनोबाजी को प्रथम सत्याग्रही घोषित किया। सत्याग्रह में हजारों लोगों ने हिस्सा लिया। सालभर बाद सरकार ने सभी सत्याग्रहियों को मुक्त कर दिया।

बाद में युद्ध की स्थिति बदली, जापान लड़ाई में कूदा और अंग्रेज हारने लगे। ऐसी विकट परिस्थिति में भी ब्रिटेन ने भारत की स्वतंत्रता का हक कबूल नहीं किया। इसलिए महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने लड़ाई की घोषणा करना तय किया और 8 अगस्त, 1942 को मुम्बई अधिवेशन में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित किया। 9 अगस्त को बड़े सबेरे गांधीजी को गिरफ्तार किया गया और हजारों-लाखों लोग जेल में गये। गांधीजी करीब 2 साल जेल में रहे। देश में अपूर्व आन्दोलन चला। भारत का स्वयं निर्णय का हक नकारने के कारण इंग्लैण्ड की दुनियाभर में बदनामी हुई। विश्वयुद्ध मानवीय स्वतंत्रता के लिए लड़ा जा रहा है, इंग्लैण्ड और मित्र राष्ट्रों के इस दावे में कोई सच्चाई नहीं रही। फरवरी, 1944 को जेल में ही कस्तूरबा का निधन हुआ। युद्ध-स्थिति पलट जाने से 1944-1945 में गांधीजी और सत्याग्रहियों को मुक्त किया गया। राजनीतिक चर्चाओं का दौर शुरू हुआ।

आखिरकार अंग्रेजों की भेद-नीति की आंशिक विजय हुई। मुस्लिम लीग ने कौमी दंगे शुरू किये। पूर्व बंगाल के नोआखली जिले में हजारों हिन्दुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बनाया गया और सैकड़ों महिलाओं के साथ बलात्कार हुआ। गांधी की आत्मा तिलमिला गयी। 77 वर्ष की उम्र में, जीवन की संध्या-वेला में यह वृद्ध महात्मा अकेले नोआखली गया और वहाँ उन्होंने नंगे पैर पदयात्रा की, पीड़ितों के आँसू पोंछे और उन्हें हिम्मत दी। फलस्वरूप हिंसा का ताण्डव-नृत्य वहाँ समाप्त हुआ। लेकिन मुस्लिम लीग ने भारत में दंगे शुरू किये थे। यह मौका देखकर ब्रिटेन ने हिन्दुस्तान के दो दुकड़े कर दोनों को स्वतंत्र करने का निर्णय लिया। गांधीजी से बिना पूछे कांग्रेस नेताओं ने भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया। कांग्रेस को गांधीजी कहते रह गये कि मुझे एक बार मौका दीजिए, मैं इसमें कोई-न-कोई मार्ग निकाल लूँगा। गांधीजी की बात कांग्रेस ने नहीं मानी।

आखिरकार 15 अगस्त, 1947 को राष्ट्र के दो टुकड़े होकर स्वतंत्रता आयी। महात्मा गांधी को मौत से भी ज्यादा दुख हुआ। स्वतंत्रता के बाद भारत से पाकिस्तान जानेवालों और पाकिस्तान से भारत आनेवालों के झुण्ड के झुण्ड जाने-आने शुरू हो गये। इस अदला-बदली में लाखों लोगों की कतल हुई। मानवता कराह उठी। करीब एक करोड़ लोग इधर से उधर गये। ऐसे समय महात्मा चुप कैसे बैठता! जीवनभर उन्होंने मानवता के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था। यह सारा तत्त्वज्ञान पिघल रहा था। जीवन के आखिरी दिनों में उन्होंने अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया। कतल रोकने के लिए उन्होंने कलकत्ता में उपवास शुरू किया। एक चमत्कार हुआ। दो-तीन दिनों में ही हत्याएँ रुक गयीं और हिन्दू-मुसलमानों के बीच शान्ति स्थापित हुई। उस समय के गवर्नर-जनरल लॉर्ड माउंट बेटेन ने कहा कि मेरी 50,000 फौज पश्चिम की सीमा पर लड़ रही है; तो भी कतल रुकी नहीं है। पूर्व में एक निहत्थे सिपाही ने कतल रोकने में सम्पूर्ण सफलता प्राप्त की है। ऐसी ही शान्ति उन्होंने बिहार में स्थापित की । शान्ति के लिए पाकिस्तान जाने से पहले दिल्ली में शान्ति हो, इस हेतु वे दिल्ली आये। वहाँ भी तीन-चार महीनों में उनके प्रयत्नों से शान्ति की स्थापना हुई।

स्वराज्य की सरकार अनाज पर कंट्रोल और राशनिंग लागू कर नागरिकों, व्यापारियों और सरकारी अधिकारियों को भ्रष्टाचार करने के लिए परिस्थिति बना रही है, यह जानकर उन्होंने प्रार्थनासभा में इसके विरुद्ध अपनी आवाज उठायी। दूसरे ही दिन सरकार ने कंट्रोल की घोषणा वापस ले ली। भारत-पाकिस्तान बँटवारे के समय हिसाब कर विभाजित भारत पर पाकिस्तान को देने के लिए 75 करोड़ का कर्ज निकला। इसमें से 20 करोड़ रुपये भारत ने पाकिस्तान को दे भी दिये। बचे हुए 55 करोड़ रुपये देने में भारत टालमटोल करने लगा। वह दो राष्ट्रों के बीच हुए करार का भंग हुआ। मुख्यतः शान्ति स्थापना हेतु अन्य

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

अनेक माँगों के साथ एक माँग 55 करोड़ रुपये की थी। उपवास शुरू किया। सत्य और अहिंसा से गांधीजी ने स्वराज्य प्राप्त किया और स्वराज्य के प्रभातकाल में सत्य को पैरोंतले रौंदने का यह कार्य हुआ। दिल्ली में शान्ति स्थापित हुई और आखिरकार भारत सरकार ने 55 करोड़ रुपये पाकिस्तान को दे दिये। इसे निमित्त बनाकर नाथूराम गोडसे ने गांधी पर 30 जनवरी, 1948 को गोलियाँ दागीं। इसके पूर्व गांधी की हत्या का प्रयत्न छह बार इन्हीं लोगों ने किया था जिनमें एक बार स्वयं नाथूराम गोडसे का हाथ था। यह सिद्ध हो चुका है। गांधीजी ने 'हे राम' कहते हुए प्राण छोड़ दिया। सारी मानवजाति शोक-समुद्र में डूब गयी।

अध्याय : छठवाँ

गांधी की विचारधारा

सामुदायिक साधुत्व एवं सत्याग्रह का प्रथम प्रणेता महात्मा गांधी का सन्देश क्या है? मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है, ऐसा महात्मा गांधी कहते थे। मेरा सारा जीवन आत्मतत्त्व की खोज है, ऐसा वे कहते थे। अपने आत्मचरित्र को उन्होंने 'सत्य के प्रयोग' सार्थक नाम दिया है। सत्य ही परमेश्वर है, ऐसी उन्होंने परमेश्वर की नयी परिभाषा की। इस व्याख्या के कारण वे नास्तिक को भी आत्मसात् कर सके।

सत्य यानी विश्व का होना — विश्व का अस्तित्व। सम्पूर्ण सत्य का आविष्कार मानव-जीवन में होना असम्भव है। अतः मानव को जो दीखता है वह सापेक्ष सत्य है। इसलिए एक को जो सत्य लगता है वह दूसरे को वैसा ही लगेगा, ऐसा नहीं है। हरएक में परमात्मा है इसलिए किसी देहधारी की हत्या नहीं करनी चाहिए, यह निष्कर्ष निकलता है। सहनशीलता और अहिंसा इसमें से निकलते हैं। गांधीजी कहते हैं, ''ऐसे व्यापक सत्यनारायण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए जीवमात्र के प्रति आत्मवत् प्रेम की परम आवश्यकता है। और जो मनुष्य ऐसा करना चाहता है, वह जीवन के किसी भी क्षेत्र से बाहर रह नहीं सकता। जो यह कहता है कि धर्म का राजनीति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है वह धर्म को नहीं जानता। बिना आत्म-शुद्धि के, जीवमात्र के साथ ऐक्य सध ही नहीं सकता। आत्मशुद्धि के बिना अहिंसा-धर्म का पालन सर्वथा असम्भव है। अशुद्धता परमात्मा के दर्शन करने में असमर्थ है। यह शुद्धि साध्य है।''

इस उद्देश्य के लिए रामनाम लेकर चुप न बैठते हुए उन्होंने मानव-सेवा का मार्ग अपने खुद के आचरण से दिखाया। सेवा की उनकी दौड़ यहाँ तक गयी कि सेवाग्राम में कुष्ठरोगी परचुरे शास्त्री की मालिश वे अपने हाथ से हर रोज करने लगे। भंगियों से एकरूपता साधने के लिए उन्होंने आश्रम में संडास-सफाई का नियम बनाया। गरीब लोगों के दुख का उन्होंने स्वयं अनुभव लिया। उड़ीसा में एक ही साड़ी पहननेवाली महिला को देखकर उन्होंने टोपी, कुर्ता छोड़ दिया और गमछा पहनकर रहने लगे। सूट-बूट और पगड़ी तो बहुत पहले से ही छूट चुकी थी।

दरिद्रनारायण को दिन में दो समय सम्मान के साथ रोटी मिले और वह अपने परिश्रम से स्वाभिमान के साथ कमाई कर सके, इसलिए उन्होंने चरखे की खोज की और आमरण खादी-ग्रामोद्योग का प्रचार किया। राष्ट्र को जगाने और निर्माण करने के लिए उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता, खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम, प्रौढ़-शिक्षा, अस्पृश्यता-निवारण, सफाई, स्त्री-पुरुष समानता, किसानों, मजदूरों और विद्यार्थियों में काम, मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का प्रचार, आर्थिक समानता, कुष्ठसेवा, गोसेवा आदि 18 रचनात्मक कार्यक्रम राष्ट्र के सामने रखे। यह कार्यक्रम राष्ट्र के लिए राष्ट्रपिता की अपूर्व वसीयत है। केवल अपनी सम्पत्ति ही नहीं, अपनी बुद्धि, कला, शरीरशक्ति आदि अपने पास का सब कुछ परमेश्वर का यानी समाज का दिया हुआ है। हम उसके मालिक नहीं, ट्रस्टी हैं। इस ट्रस्टीशिप का विचार उन्होंने ही दिया।

आत्मशुद्धि के लिए हररोज हरएक शरीरश्रम करके रोटी कमाये, इसलिए सर्वत्र सबके लिए सुलभ ऐसी सूत कताई कर, प्रतीकात्मक क्यों न हो, हर व्यक्ति श्रमयज्ञ करे। हररोज सबेरे-शाम भगवान् की हर कोई प्रार्थना करे। ऐसे अनेक नियम उन्होंने इस हेतु बनाये। प्रार्थना में निम्न एकादश व्रतों का पठन उन्होंने शुरू करवाया।

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह
शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन
सर्वधर्म समानत्व, स्वदेशी स्पर्शभावना
विनम्र व्रतनिष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं।

इनमें से पहले पाँच व्रतों का विवरण करनेवाले पत्र उन्होंने जेल से हर मंगल के दिन सबेरे आश्रमवासियों को लिखे। बाद में 'मंगल प्रभात' नाम से इन पत्रों की एक पुस्तिका साधकों के लिए प्रकाशित हुई। खुद के विकास के लिए और सत्याग्रही के लिए आत्मशुद्धि अनिवार्य है।

अन्याय को सहन न करते हुए या हिंसा से मुकाबला करने के बजाय अहिंसा से प्रतिकार करने का यानी सामूहिक सत्याग्रह की खोज उन्होंने ही की। फलस्वरूप डरपोक राष्ट्र में निर्भयता आयी। सामान्य पुलिस से डर कर सौ साल पहले लोग घरों में छिप बैठते थे। उसी राष्ट्र में लाखों-करोड़ों केवल पुरुषों को ही नहीं, अबला मानी जानेवाली और चूल्हा-चक्की में मगन रहनेवाली लाखों महिलाओं और किशोरों को उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में लाठियाँ खाने, जेल जाने और मौका पड़ने पर प्राण न्योछावर करने के लिए प्रवृत्त किया। इस प्रकार गांधीजी ने सामुदायिक साधुत्व और वीरत्व राष्ट्र में निर्माण किया। अहिंसा द्वारा केवल छोटे राष्ट्रों को ही नहीं, दुर्बल व्यक्ति को भी अन्याय-निवारण के लिए सारी दुनिया के खिलाफ लोहा लेने का उन्होंने सामर्थ्य निर्माण किया। यह महात्माजी की दुनिया के लिए अनुपम देन है। इस प्रकार आत्मशुद्धि कर, रचनात्मक कार्यक्रम अपनाकर और सत्याग्रह के लिए खड़े होकर सामान्य मोहन असामान्य बना — महात्मा बना, यह सर्वसाधारण आदमी के लिए कितना बड़ा आश्वासन है।

भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है, यह गांधीजी को पूरा जँच गया था। यह संस्कृति सहजीवन, संयम और त्याग पर आधारित है। एशिया, यूरोप और अफ्रीका में उन्होंने पाश्चात्य भोगप्रधान संस्कृति को नजदीक से देखा था। आधुनिक औद्योगीकरण से बेरोजगारी पैदा होकर गाँव कैसे उजड़ जाते हैं, इसका दर्शन उन्होंने किया था। इसलिए इन्द्रियों के प्रति आसक्त करनेवाले इस भोगप्रधान संस्कृति के खिलाफ उन्होंने आजीवन संघर्ष किया। मेरी लड़ाई अंग्रेज के खिलाफ नहीं है, यह दो संस्कृतियों के बीच की लड़ाई है, ऐसा उन्होंने अपनी 'हिन्दस्वराज' पुस्तिका में लिखा है। अशुद्ध साधनों से शुद्ध साध्य की प्राप्ति कदापि संभव नहीं है, इस सत्य का उन्होंने आविष्कार किया। जैसा बीज, वैसा फल, यह सिद्धान्त कृषि-जगत् में मान्य हुआ है। उसी प्रकार मानव-जगत् में जैसा विचार-आचार वैसा ही परिणाम निकलेगा, यह सिद्धान्त उन्होंने अपने जीवन द्वारा प्रतिपादित किया। इस प्रकार जिसकी लाठी उसकी भैंस या 'शठं प्रति शाठ्यम्' इस लोकमान्यता के खिलाफ ऋषि-प्रणीत शाश्वत सत्य, अहिंसा और साधन-शुद्धि का प्रतिपादन किया। इसलिए अनायास ही वे बुद्ध-महवीर की श्रेणी में दाखिल हुए।

राजनीति और अर्थनीति के बारे में उनके विचार उन्हीं के शब्दों में देखिए –''स्वराज्य नीचे से, गाँव से शुरू होना चाहिए। मेरी ग्राम-स्वराज्य की कल्पना यह है कि वह एक पूर्ण प्रजातंत्र रहेगा। अपनी मुख्य जरूरतों के लिए वह अपने पड़ोसियों पर भी निर्भर नहीं रहेगा, लेकिन अपनी अन्य अनेक जरूरतों के लिए परस्पर सहयोग से काम करेगा। हरएक गाँव अपने लिए आवश्यक अनाज और कपड़ों के लिए कपास पैदा करेगा। गाँव के पास इतनी परती जमीन होनी चाहिए जिसमें पशु चर सकें, गाँव के बच्चे व बड़े लोग खेल सकें और मनोरंजन कर सकें। बची हुई भूमि में, गाँजा, तम्बाकू जैसी चीजों को छोड़कर अन्य फसलें पैदा कर आर्थिक लाभ ले सकेगा। हर गाँव समृद्ध प्रजातंत्र होगा। गाँवों में कोई निरक्षर नहीं रहेगा, न कोई बेरोजगार। हरएक को भोजन के लिए पौष्टिक अन्न, निवास के लिए अच्छा हवादार मकान और तन ढँकने के लिए पर्याप्त खादी मिलेगी। हरएक ग्रामवासी को सफाई और आरोग्य के नियमों की जानकारी रहेगी और वह उनका पालन करेगा। ऐसे ग्रामराज्य की बढ़ती हुई विविध आवश्यकताओं को गाँव खुद पूरा करेगा, अन्यथा गाँव की गति कुण्ठित हो जायेगी। हरएक गाँव में खुद की रंगशाला और सभाभवन रहेगा। जहाँ से शुद्ध पानी मिल सके, ऐसे गाँव के पानी की योजना रहेगी। ऐसे गाँव में जाति-पाँति, छुआछूत जैसे भेद बिलकुल नहीं रहेंगे। नीचे और ऊपर के वर्ग-भेद भी समाप्त होंगे। गाँव की रक्षा के लिए शान्ति-सेना रहेगी जो गाँव की रखवाली का काम बारी-बारी से करेगी। सत्याग्रह और असहयोग पर आधारित अहिंसा की सत्ता ग्रामीण सरकार की शासन-शक्ति रहेगी। मैं ऐसे भारत के लिए प्रयत्न करूँगा जिसमें गरीब-से-गरीब अनुभव करेगा कि यह उसका देश है और राष्ट्र-निर्माण में उसकी आवाज का महत्त्व है। सच्चा स्वराज्य मुट्ठीभर लोगों के हाथ में सत्ता आने से निर्माण नहीं होगा, बल्कि जब सत्ता का दुरुपयोग हो, उस समय सब लोगों में उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करने से निर्माण होगा।''

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

अनेक शिक्षितों के मन में यह धारणा है कि गांधीजी यंत्रों के विरोधी थे। इससे बड़ा भ्रम दूसरा क्या हो सकता है? महात्मा गांधी ने 1925 में ही एक प्रश्न के उत्तर में साफ-साफ कहा था, 'मेरा विरोध यंत्रों से नहीं, यंत्रों के बारे में जो पागलपन है, उससे है। श्रम बचाने की नौबत आज यहाँ तक गयी है कि हजारों लोग बेकार होकर भूखे मर रहे हैं। मुझे भी समय और श्रम में बचत करनी है, लेकिन यह मुट्ठीभर लोगों के लिए नहीं, सारी मानव-जाति के लिए हो। घर-घर में चलनेवाले यंत्रों में सुधार किया गया तो मैं इसका स्वागत करूँगा। लेकिन समय और परिश्रम की बचत कर यंत्र-शक्ति से मुट्ठीभर लोगों का धनाढ्य होना मैं सहन नहीं कर सकता। आज यंत्रों के कारण मुट्ठीभर लोग लाखों लोगों की पीठ पर सवार होते हैं और उन्हें सताते हैं। इसका कारण यंत्रों के चलाने के मूल में आदमी का लोभ है, जन-कल्याण की भावना नहीं है। यंत्रों के इस दुरुपयोग के विरुद्ध मैं अपनी पूरी शक्ति से लड़ रहा हूँ।' इससे साफ होता है कि गांधीजी यंत्रों के खिलाफ नहीं, यंत्रों से होनेवाले शोषण और यंत्रों के पागलपन के विरुद्ध थे।

अध्याय : सातवाँ

गांधी-विचार की प्रासंगिकता

गांधी-विचार हमने देखा। भारत माता के इस अद्वितीय पुत्र के विचारों को आजाद भारत भूल गया। पश्चिमी सभ्यता से भारत सम्मोहित हुआ और उस बाढ़ में बह गया। पश्चिम की नीति-निरपेक्ष राजनीति और अर्थनीति भारत ने स्वीकार की। आज 65 वर्षों से भारत की जनता और सरकार इस रास्ते पर चल रही है। परिणामस्वरूप आजादी को 65 वर्ष हो जाने पर भी गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, व्यसन, दहेज, जातिभेद, सांप्रदायिक दंगे इत्यादि समाप्त नहीं हुए। इतना ही नहीं, उल्टे उनमें वृद्धि ही हुई है। स्वदेशी का मंत्र भूलकर सैकड़ों बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और एक लाख करोड़ रुपयों के विदेशी कर्ज के जाल में भारत फँस गया है। गांधीजी के स्वावलम्बन के सिद्धान्त को देश ने कभी का छोड़ दिया है। कश्मीर और उत्तर-पूर्व में देश से अलग होने के लिए हिंसक कार्रवाई चल रही है। गुजरात में हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए जिसमें अनेक हिन्दू और मुसलमानों की हत्याएँ परस्पर की गयीं। दो-तीन दिन तक मानो प्रदेश में सरकार थी ही नहीं।

देश की यह दुर्दशा क्यों हुई? भारत अपने राष्ट्रपिता की सीख को भूल गया, यही इसका प्रमुख कारण है। आज रूस और पूर्वी यूरोप के राष्ट्र साम्यवाद को छोड़ रहे हैं। अमेरिका सरीखे पूँजीवादी राष्ट्रों में भी बेरोजगारी है। हवा-पानी-मिट्टी का प्रदूषण, जंगलों का नाश, अम्ल-वृष्टि आदि वहाँ हो रहे हैं। अणु-शक्ति के खतरे और अणुबम से मानव का जीवन ही समाप्त हो जायेगा, ऐसा डर दुनियाभर में पैदा हुआ है। ढाई लाख से अधिक किसानों ने गत एक दशक में कर्ज वापस करने की असमर्थता के कारण आत्महत्या की है। भोगवाद के कारण दो-चार पीढ़ियों के बाद भू-गर्भ में लोहा, कोयला, पेट्रोल, पानी आदि खनिज पदार्थ समाप्त हो जायेंगे। फिर आगे आनेवाली पीढ़ियाँ क्या करेंगी? भोग की अमर्यादित लालसा के कारण क्या हम 'ययाति-संस्कृति' को चलानेवाले हैं? गांधीजी ने कहा था, 'सबकी सारी आवश्यकताएँ पूर्ण करने इतनी सामग्री धरती माता के पास है, लेकिन एक भी आदमी का लोभ पूरा करने के लिए सारी धरती अपर्याप्त रहेगी।' क्योंकि लोभ का अन्त नहीं है। तो फिर हम किस रास्ते पर चलें? दुनिया में दो रास्ते हैं। एक है पश्चिमी, दूसरा है गांधी का। आज भारत पहले रास्ते पर चल रहा है। अगर गांधी-मार्ग पर देश 65 साल से चलता आया होता तो कभी का सबको काम मिलकर गरीबी इतिहास में दाखिल हो गयी होती। गाँव और नगर तेजस्वी बनते। शराब समाप्त होती। सामाजिक समानता होकर दहेज भूतकाल का विषय बन जाता। शिक्षा में सार्थक परिवर्तन होता और युवकों तथा राष्ट्र में आनन्द छा जाता। लेकिन हमने गांधी का रास्ता पसन्द नहीं किया। आज भी दोनों मार्गों की तुलना कर हमें—खासकर तरुणों को—एक को चुनना चाहिए।

आज गांधी-विचार की ओर दुनियाभर के विचारकों का — खासकर युवकों का ध्यान गया है। दुनियाभर में इस दिशा में प्रयोग हो रहे हैं। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे देश में गांधी-विचार पर कभी गम्भीरता से विचार तक नहीं किया गया। हमने पश्चिम की अंधी नकल की। इसलिए स्वराज्य में से गांधी की कल्पना का रामराज्य प्रकट होने के बजाय हरामराज्य निर्माण

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com

हुआ है क्योंकि आज कम-से-कम काम और आधिक-से-अधिक दाम, यह अधिकांश लोगों का मंत्र बन गया है। यह तो हराम है। मिट्टी दूषित हुई, पानी दुर्लभ हुआ, हवा खराब हुई साथ ही राष्ट्र की एकात्मता और शान्ति भंग हुई।

इस स्थिति को बदलकर राष्ट्रभर में मनोमंथन हो। इसलिए गांधी-विचार की प्रासंगिकता भारत में जाननी चाहिए। बेरोजगारी, केन्द्रीयकरण, प्रदूषण और हिंसा, ये देश के प्रमुख आर्थिक, राजनैतिक, पर्यावरणीय और सामाजिक प्रश्न हैं। इन समस्याओं को लेकर पूरे राष्ट्र में विचार-मंथन शुरू होः

(1) खादी-ग्रामोद्योग का स्वीकार और केन्द्रीय उत्पादनों का यथासम्भव बहिष्कार, (2) ग्रामसभा को—शहर में मुहल्ला सभा को—गाँव-नगर के कारोबार की सत्ता का हस्तांतरण और (3) हिंसा का सर्वथा त्याग—सजीव खेती। इन कार्यक्रमों का प्रसार हो। इससे राष्ट्र चिर-निद्रा में से जगेगा और वैचारिक क्रान्ति का आरम्भ होगा, ऐसी आशा है।

हमारे उद्धार के लिए गांधी जैसे महामानव को भगवान् ने भारत में भेजा, यह उसकी महान् कृपा हुई। गांधी ने निःशस्त्र राष्ट्र को स्वतंत्र किया। असम्भव लगनेवाला यह काम उन्होंने प्रत्यक्ष कर दिखाया। यह एक चमत्कार हुआ। हमने उन्हें 'राष्ट्रपिता' की पदवी प्रदान की। और उन्हीं के विचार भारत ने छोड़ दिये। यह कितनी कृतघ्नता है! गोडसे ने गांधी के शरीर की हत्या की। यह अति निन्दनीय काम उसने किया। लेकिन हमने उनकी विचारधारा को यानी उनकी आत्मा को ही तिलांजलि दे दी है।

इसलिए भारत आज महान् संकट में फँस गया है। आम जनता की भौतिक प्राथमिक आवश्यकताएँ इन 65 सालों में पूरी नहीं हुईं। और पिछले दो हजार वर्षों में भारत का जितना नैतिक पतन नहीं हुआ होगा, उतना आज हुआ है। गाँव उजड़ गये हैं और पराधीन हो गये हैं। महानगरों का जीवन नरक के समान हो गया है। इसलिए फिर से महात्मा की शरण में जाकर उनके विचार के अनुसार अपना और राष्ट्र का निर्माण हम करें। इसीमें हमारा कल्याण है। दुनियाभर के 53 नोबल पुरस्कार विजेताओं ने 19 वर्ष पूर्व दुनिया को आवाहन किया कि दुनिया के शोषण और विश्व-युद्ध को समाप्त करने के लिए दुनिया गांधी-मार्ग का अवलम्बन करे; क्योंकि यही एकमात्र मार्ग है। काश! हम इस आवाहन को सुनें।

लेकिन गांधी यानी क्या? गांधी यानी नैतिकता, गांधी यानी विकेन्द्रीकरण, गांधी यानी साधन-शुचिता, गांधी यानी दरिद्रनारायण से एकरूपता, गांधी यानी जन-सेवा, गांधी यानी रचनात्मक कार्य, गांधी यानी अन्याय के सामने घुटने न टेकते हुए अन्याय का, पशुबल से नहीं, आत्मबल से यानी सत्याग्रह से संघर्ष करना, गांधी यानी व्यक्ति और व्यवस्था — दोनों में समग्र सम्पूर्ण परिवर्तन, गांधी यानी गलत व्यवस्था से असहयोग, गांधी यानी स्वदेशी का आग्रह — पड़ोस में बनी हुई चीजों को खरीदना और दूर की तत्सम्बन्धी चीजों का यथासम्भव बहिष्कार। गांधी यानी जो-जो जँचा, उसका फौरन आचरण करना। राष्ट्रकवि दिनकर ने ठीक ही गाया है :

''गांधी की लो शरण बदल डालो मिलकर संसार
या फिर रहो कल्कि के हाथों से मिटने को तैयार
पहुँच गयी है घड़ी फैसला अब करना ही होगा
दो में किसी राह पर पगले पग धरना ही होगा।''

जब तक आकाश में चाँद-सूरज है, सितारे हैं और पृथ्वी पर मानव है तब तक महात्मा गांधी अजर-अमर रहेंगे।

०

Online Edition downloaded from http://www.sssprakashan.com